DR.MALA KUMARI
ASSISTANT PROFESSOR (GUEST TEACHER)
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY
A.N.D COLLEGE SHAHPUR PATORY,SAMASTIPUR
B.A –PART 2 PSYCHOLOGY (HONS)
PAPER-4 ,UNIT-3,
BEHAVIOURISM:CONTRIBUTION OF WATSON

LECTURE-26

CONTRIBUTION OF WATSON

वाटसन का योगदान

जे०बी० वाटसन का जन्म ग्रीन विली,दक्षिण कैरोलिना में हुआ था |उनकी माता धार्मिक प्रवृति की थी जबकि पिता में उस प्रवृति का अभाव था |उन्होंने लैटिन ,ग्रीक ,गणित एवं दर्शनशास्त्र जैसे विषयों का अध्ययन फुरमान विश्वविद्यालय में किया है |1900 में उन्हें एम० ए० की उपाधि मिलती |जॉन डीवी के साथ वे शिकागो विश्वविद्यालय में दर्शनशास्त्र का अध्ययन किये | परन्तु एंजिल ने उनमे प्रयोगात्मक मनोविज्ञान के प्रति रूझान उत्पन्न किया | 1903 में शिकागो विश्वविद्यालय से पी०एच०डी की उपाधि प्राप्त करने वाले सबसे छोटे मनोवैज्ञानिक थे |1908 में वाटसन जॉन हॉपकिन्स विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान विभाग के अध्यक्ष होकर चले गए | इतिहासकारों का कहना

है की 1908 से लेकर 1920 तक वाटसन का सबसे तीव्र उत्पादक अवधि था |

वाटसन ने 1913 में जॉन हॉपकिन्स विश्वविद्यालय में व्यवहारवाद की स्थापना की |उस समय में वे इस विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग के अध्यक्ष थे |इस सम्प्रदाय या स्कूल की स्थापना संरचनावाद तथा प्रकार्यवाद के विरोध में हुआ | वाटसन के व्यवहारवाद के दो उपसम्प्रदाय है –

प्राथमिक (PRIMARY) तथा दूसरा (SECONDARY) | घानात्मक पहलू (POSITIVE ASPECT) तथा नकारात्मक पहलू (NEGATIVE ASPECT) |

वाटसन के घनात्मक पहलू में वस्तुनिष्ठ मनोविज्ञान पर बल डाला गया है |वे पशु मनोविज्ञान की प्रविधियों एवं नियमों को मानव मनोविज्ञान पर लागू करना चाहते थे |उनके लिए व्यवहार का अध्ययन न की चेतना का अध्ययन मनोवैज्ञानिकों के लिए वैज्ञानिक आँकड़े के मुख्य स्रोत है |व्यवहारवाद के इस पहलू को 'आनुभाविक व्यवहारवाद या कार्य-विधि व्यवहारवाद कहा गया | वाटसन के व्यवहारवाद का नकारात्मक पहलू टिचेनर तथा उंट के अंतर्निरीक्षणात्मक मनोविज्ञान तथा एंजिल के प्रकार्यवाद को अस्वीकृत किया जाना था | 1919 में वाटसन ने अतिन्द्रिय स्थिति ने बल डाला जिसमे मन या चेतना के अस्तित्व को स्वीकारा नहीं गया |शायद यही कारण है की वाटसन के मनोविज्ञान को 'मन-रहित मनोविज्ञान' कहा गया है |

एक प्राथमिक सम्प्रदाय के रूप में वाटसन के व्यवहारवाद की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन निम्नांकित शीर्षकों के तहत किया जा सकता है –

1. मनोविज्ञान की परिभाषा – वाटसन के लिए मनोविज्ञान प्राकृतिक विज्ञान की एक शाखा है जो मानव व्यवहार का अध्ययन करता है | 'व्यवहार' का अर्थ यहाँ विस्तृत है जिसमे शाब्दिक अभिव्यक्ति भी सम्मिलित है |अतः व्यक्ति द्वारा कुछ 'कहना' या 'बोलना' को भी व्यवहार में ही सम्मिलित किया गया है | उन्होंने यह भी स्पष्ट कर दिया है की मनोविज्ञान का विषय –वस्तु न चेतना है न मानसिक कार्य और न ही किसी तरह की मनोदैहिकी प्रक्रियाएं है |
2. मनोविज्ञान की विधियाँ – वाटसन मनोविज्ञान की वैज्ञानिक विधि के रूप में अंतर्निरीक्षण को अस्वीकृत कर दिये थे |चूँकि मनोविज्ञान व्यवहार का वस्तुनिष्ठ विज्ञान है ,अतः इसकी विधियाँ निश्चित रूप से अनुभाविक होगी | वाटसन द्वारा मनोविज्ञान की निम्नांकित चार विधियों की पहचान की गयी है –

(I) प्रयोग एवं प्रेक्षण – वाटसन का प्रयोगात्मक कार्यक्रम बड़ा ही मजबूत तथा पूर्व निर्धारित था |एक प्रयोगकर्त्ता के रूप में वे प्रयोगात्मक विधि को महत्वपूर्ण बतलाये |

(II) अनुबंधित प्रतिवर्त प्रविधि –वाटसन ने अनुबंधित प्रतिवर्त प्रविधि को भी महत्वपूर्ण बतलाया जिसे वे पैवलव तथा बेखटेरेव के शोधो से लिए थे | वे अनुबंधन को व्यवहार के विश्लेषण करने की एक वैज्ञानिक विधि के रूप में स्वीकार किया |

(III) परिक्षण-कार्यविधि –वाटसन ने मनोवैज्ञानिक परीक्षण-कार्य को भी एक महत्वपूर्ण विधि माना है | जब कोई व्यवहारवादी किसी मनोवैज्ञानिक परिक्षण का उपयोग करते है , तो वे उसे किसी वस्तुनिष्ठ परिस्थिति के प्रति की

गई अनुक्रियाओं या व्यवहारोंके मापन के रूप में उसका उपयोग करते है |वाटसन ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि मनोवैज्ञानिक परीक्षण मानसिक परीक्षण नहीं है क्योंकि वह किसी विशिष्ट क्षमता का मापन मन के पहलू के रूप में नहीं करता है |

(IV) शाब्दिक रिपोर्ट की विधि –वाटसन ने मानव प्रयोज्यों के लिए शाब्दिक रिपोर्ट को अनुसंधान की एक प्रमुख विधि के रूप में अपनाया | इस विधि में प्रयोज्य अपने हालत या निष्पादन के बारे में एक रिपोर्ट या प्रतिवेदन देता है |संरचनावादियों द्वारा वाटसन के 'शाब्दिक रिपोर्ट विधि' की यह कहकर आलोचना की गयी की वे अंतर्निरीक्षण विधि को ही नाम बदलकर अर्थात शाब्दिक रिपोर्ट कहकर अपने सम्प्रदाय में सम्मिलित कर लिए है |

3. मनोविज्ञान के अभिगृहीत – वाटसन द्वारा अपने व्यवहारवाद में वर्णित मनोविज्ञान के लिए कुछ विशेष पूर्वकल्पनाएँ जिन्हें अभिगृहीत कहा जाता है , का वर्णन किया गया है | इनके मुख्य अभिगृहीत निम्नांकित है –

(I) ग्रंथीय श्रावों तथा पेशीय गतियों से ही व्यवहार का निर्माण होता है और इसलिए व्यवहार को दैहिक-रासायनिक प्रक्रियाओं के रूप में भी मापा जा सकता है |

(II) अनुक्रिया तत्वों के मिलने से व्यवहार का निर्माण होता है तथा इसे उचित वैज्ञानिक विधि द्वारा विश्लेषित किया जा सकता है |

(III) प्रत्येक प्रभावी उद्दीपक एक तात्कालिक अनुक्रिया उत्पन्न करता है | इसलिए व्यवहार का एक निश्चित कारण तथा परिणाम निर्धार्यता होता है |

4. ऑकड़ो की प्रकृति – वाटसन ने हमेशा वस्तुनिष्ठ ऑकड़ो पर बल दिया |अंतर्निरीक्षण द्वारा चेतन के अध्ययनों से प्राप्त आत्मनिष्ठ ऑकड़ो को अस्वीकृत कर दिया |
5. सम्बन्ध का नियम –वाटसन ने अपने व्यवहारवाद में बारम्बारता के नियम तथा नवीनतम के नियम को सम्बन्ध के नियम के रूप में काफी मान्यता दी है |बाद में उन्होंने पैवलव द्वारा प्रयोगशाला में अध्ययन किये गए | अनुबंधन के नियम को भी महत्वपूर्ण माना | उनका मत था कि अनुबंधन सीखने का एक महत्वपूर्ण नियम है तथा सभी तरह के सीखने का एक महत्वपूर्ण नियम है तथा सभी तरह के सीखना को अनुबंधन के रूप में ही व्यक्त की जा सकती है |
6. चयन का नियम – जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है व्यवहारवाद के दो मुख्य उद्देश्यों में से एक उद्देश्य है अनुक्रिया के बारे में पूर्वकथन करना |यह उद्दीपक के चयनात्मक प्रक्रिया द्वारा संभव हो पाता है | प्राणी को एक साथ कई तरह के उद्दीपक उत्तेजित करते है |लेकिन उनमे से वह कुछ के प्रति अनुक्रिया करता है तथा कुछ के प्रति अनुक्रिया नहीं करता है |
7. मन-शरीर समस्या – वाटसन द्वारा मन-शरीर समस्या पर जो विचार व्यक्त किये गए है ,वे व्यवहारवाद का एक प्रमाणक है |वाटसन तथा उनके अन्य सहयोगियों द्वारा मन या चेतन के अस्तित्व को स्वीकारा नहीं गया | इन लोगों का मत था कि प्राणी

में सिर्फ शरीर होता है , मन नहीं | वाटसन ने यह पुर्णतः स्पष्ट किया था कि चेतन एक ऐसी वस्तु है जिसे प्राणी न तो कभी देखता है , न स्पर्श करता है ,न सूंघता है और न ही स्वाद लेता है | यह एक तरह की ऐसी पूर्वकल्पना है जिसकी जाँच संभव नहीं है | इस तरह से मन शरीर समस्या पर वाटसन की स्थिति एक अद्वैतवादी का था |

वाटसन ने यह स्पष्टतः बतलाया कि एक व्यवहारवादी के लिए मस्तिष्कीय अनुक्रियाएँ महत्वपूर्ण नहीं होती है |वाटसन ने मस्तिष्क को एक 'रहस्य बाक्स' कहा है |

अतः वाटसन का व्यवहारवाद औपचारिक रूप से स्थापित एक ऐसा स्कूल है जो मनोविज्ञान को न केवल परिभाषित ही किया बल्कि दैहिक अद्वैततवाद के दावे को मजबूत करते हुए मनोविज्ञान के विभिन्न समस्याओं पर अपना वैज्ञानिक विचार व्यक्त किया |